जम्मू और कश्मीर यू.टी.
कृषि उत्पादन और किसान कल्याण निदेशालय, तालाब तिल्लो, जम्मू
गेहूं में पीला रतुआ (Yellow Rust) प्रबंधन

जम्मू संभाग के गेहूं उगाए जाने वाले क्षेत्रों में पीला रतुआ एक प्रमुख बीमारी है।यह पत्तियों पर पीले रंग की धारियां और चूर्ण के रूप में दिखाई देता है। रोग छोटे घेरों के रूप में शुरू होता है जो शीत जलवायु, बारिश और कोहरे में तेजी से फैलता है।किसानों को सलाह दी जाती है कि वह फसल की स्तिथी पर कड़ी निगरानी रखें और यदि कोई लक्षण दिखे तो निम्नलिखित प्रबंधन प्रथाओं का पालन करें।

सांस्कृतिक उपाय

1. खेत की स्वच्छता और पौधों में उचित अंतर बनाए रखें।
2. एन पी के (NPK) की संतुलित मात्रा का उपयोग करें।
3. गेहूं की पीला रतुआ प्रतिरोधी किस्मों का उपयोग करें।
4. बीज की किस्मों का हर साल प्रतिस्थापन किया जाना चाहिए।
5. संक्रमित क्षेत्र का दौरा करने के बाद हमेशा कपड़े एवं जूतों को साफ करें।

निगरानी

1. छायाधार और जल संतृप्त क्षेत्र में दिसंबर के अंतिम सप्ताह से, जब औसत तापमान 8 से 16 डिग्री के बीच हो तो नियमित निगरानी करें।
2. गेहूं के खेतों में रतुआ की खोज सुबह सवेरे करें क्योंकि उस समय पहचानना आसान होता है।
3. निगरानी करते समय पुराने एवं नीचे के पत्तों पर पीली एवं संतरी धारियों को ढूंढें।
4. रोग का शुरुआती घेरा 1 से 10 मीटर व्यास का होता है और यह आमतौर पर फसल में बीमारी के फैलने से ठीक पहले विकसित होता है।
5. जनवरी माह से सप्ताह में तीन बार फसलों की जांच करें।

रासायनिक उपाय

1. रोग के प्रकट होने पर प्रॉपिकॉनाजोल (Propiconazole) 25 इसी 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी (200 मिली लीटर प्रति 200 लीटर पानी प्रति एकड़) की धर से फसल पर छिड़काव करें।
2. छिड़काव को 15 दिनों के अंतराल पर दोहराया जाना चाहिए।
3. रोग को दूसरे खेतों में फैलने से रोकने के लिए एवं निरोगी छिड़काव के लिए प्रॉपिकॉनाजोल 25 ईसी 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी की धर से छिड़काव करें।
4. छिड़काव साफ मौसम में किया जाना चाहिए।
5. कृषि विशेषज्ञों के संपर्क में रहे और उनकी की राय अवश्य प्राप्त करें ।

प्रभारी
पौध संरक्षण अधिकारी कृषि भवन तालाब तिल्लो जम्मू

अधिक जानकारी के लिए कृपया प्लांट हेल्थ क्लिनिक जम्मू को संपर्क करें